- रचयिता -

अवध किशोर दास जी (भइयाजी)

संस्करण – चतुर्थ संस्करण

प्रति– २०००

प्रकाशन तिथि– सद्‌गुरु जयन्ती
0७मई 2०१९

प्रकाशक– श्री राम हर्षण सेवा संस्थान
श्री अयोध्या जी

ॐ गुं गुरवे नम:

दो. प्रेम मूर्ति गौरांग हे,
जय जय करुणागार।
जयति राम हर्षण प्रभु,
गुरुवर परम उदार।।
जीवन सबै व्यतीत भो,
भई न राम पद प्रीति।
हे गुरुदेव बचाइये,
मारि रही भव भीति।।

चौ. जय जय जय गुरुदेव उदारा।

जय उदार मणि रस दातारा।

जयति राम हर्षण इति ख्याता।

जयति परम परमार्थ प्रदाता।

जय गौरांग प्रणत हितकारी।

जय यतिवर्य महा सुख कारी।

जय जय जय धवलाम्बर धारी।

जय जय जय रस रास विहारी।

दमदमात तिलकांकित भाला।

ज्योतिर्मय अति भव्य विशाला।

परम मृदुल सर्वांग शरीरा।

श्रवत सदैव रसामृत नीरा।

अरुण ललित करतल पदतरवा।

अरुण कमलहूँ के दुति हरवा।

पद तल ऊर्ध्व रेख रस दानी।

बरवश उर महँ रही समानी।

पद नख मणि प्रकाश मनहारी।
महा तमस उर देत विदारी।
रटत निरन्तर सियवर नामा।
ध्यावत अहिनिशि रूप ललामा।
परम प्रसन्न वदन अभिरामा।
जयति दीर्घ दृग देव ललामा।
दो. खिलखिलाय विहँसत जबै,
दन्तावलि दमकात।
अति प्रसन्न मुख माधुरी,
बरवश हिये समात।।

चौ. जय जय दीर्घ दृगाम्बुज वारे।
अरुण अधर रस रूप सँवारे।
उन्नत रुचिर नासिका न्यारी।
शुचि शुक तुण्ड लजावनि हारी।
महा वैष्णव यति वर रूपा।
योसि सोसि तव तत्व अनूपा।
कियो अमित उपकार कृपाला।
अमित दानि वर दीन दयाला।

तारक मन्त्र दिनेश समाना।
किये प्रदान उदार महाना।
महा मन्त्र आराधक देवा।
निरत राम पद पाँवरि सेवा।
संकीर्तन उन्मत्त अतीवा।
भाव धनी परमारथ सीवा।
श्री मिथिलेश कुँवर को भावा।
निज रहनी महँ प्रगट दिखावा।

गुप्त गुप्त लीला प्रगटाई।
राम रसामृत दियो पिआई।
श्री रघुवीर व्याह रस प्रेमी।
रास रहस्य प्रकाशक नेमी।
रच्यो प्रेम रामायण नाथा।
प्रगट्यो मैथिल प्रेम सुपाथा।
लीला सुधा सिन्धु के रूपा।
सागर गागर भर्‍यो अनूपा।

सिद्धि स्वरूप सुवैभव माहीं।

प्रगटी सिद्धि प्रीति परछाहीं।

श्रीमद् रामानन्द समाना।

वपु वैभव प्रत्यक्ष दिखाना।

जय अभिनव चैतन्य उदारा।

कीन्ह्यो कीर्तन रस विस्तारा।

जय जय अभिनव तुलसी दासा।

राम चरित रस रूप प्रकाशा।

तुलसी रामानन्द चैतन्या।

एकहिं वपु प्रगटे जनु धन्या।

मंत्र रूप मंत्रांकित गाता।

प्रगट दिखायो जन सुखदाता।

मास दिवस भरि प्रेम समाधी।

विरहोन्मत्त लगी निरुपाधी।

श्री मृकण्ड सुत आश्रम जाई।

प्रेम यज्ञ रस धार बहाई।

वर वैष्णव की रहनि सिखाई।

प्रगट प्रेम पथ पाठ पढ़ाई।

कहँ लगि कहौं अमित उपकारा।

जय जग हर्षण रस अवतारा।

अस समर्थ गुरुदेव हमारे।

विलपत दीन दास प्रभु द्वारे।

अब कहाइ राउर कहँ जावौ।

हाय नाथ अब केहिं गोहरावौ।

हौं कृतघ्न अतिशय खल कामी।

मोरि सुधारहिं अन्तरयामी।

दन्त गहे तृण पाहि पुकारौं।

लतियावत सब काहिं निहारौं।

कौनौ विधि मोहि शुद्ध बनाई।

कृपा सिन्धु लेवहिं अपनाई।

दो. गुरु गौरवहिं विचारि के,
नाथ लेहिं अपनाय।
क्षुधित पिपासित दास कहँ,
देवहिं सरस बनाय।।
श्री हर्षण चालीसा पढ़ै,
अष्टोत्तार सत बार।
दास किशोर अनन्त रस,
पावै सोइ अविकार।।

———::———

सद्गुरुदेव भगवान की आरती

कलि कुटिल जीव उद्धारण, भव तारण हे।
जय जय परम उदार, श्री गुरुदेव हरे ॥१॥
सिय राघव रूप उपासक, तम नाशक हे।
परम प्रेम अवतार श्री गुरुदेव हरे ॥२॥
रोमांचित गात सुहावन, छवि छावन हे।
श्रवत नयन रसधार श्री गुरुदेव हरे ॥३॥

गौरांग दिव्य द्युति पावन, दुख दावन हे।
परम कृपा आगार, श्री गुरुदेव हरे॥४॥
मृदु मैथिल प्रेम प्रकाशक, रस शासक हे।
रस पंच पूर्ण आचार्य, श्री गुरुदेव हरे॥५॥
प्रेमा भक्ति प्रदायक, सुखदायक हे।
दास किशोर आधार, श्री गुरुदेव हरे॥६॥

शतपत्र दलायत पंकज में
करुणाघन नित्य विराजे रहें।
अति आनन्द और उछाह भरे
वर–वैष्णव भूषण साजे रहें।
सौन्दर्य के भी अधिदेवता को–
निज सन्त स्वरूप से लाजे रहें।
यश–दुन्दुभि के स्वर घोर 'किशोर'
अथोर दशों दिशि बाजे रहें।